an>

Title: Regarding danger to the existence of Pabhosa temple in Uttar Pradesh due to illegal mining.

श्री विनोद कुमार सोनकर (कौशाम्बी) : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार के गृह मंत्रालय और पर्यावरण मंत्रालय का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। मैं कौशाम्बी से चुनकर आया हूं। वहां एक स्थान पबौसा है जो यमुना नदी के तट पर स्थित है। वहां जैन धर्म के छठे तीर्थंकर पाद-प्रभु का जन्म हुआ था। वहां दो छोटी-छोटी पहाड़ियां हैं जो गंगा-यमुना की अंतर-विधि में एक मातृ पहाड़ी है जो पबौसा पहाड़ के रूप में जानी जाती है जो लगभग 52 बीघा में फैला हुआ है, जिसका खनन माफियाओं द्वारा बैनामा करा लिया गया था। सरकारी सम्पति होने के कारण बैनामा निरस्त कराया गया, परन्तु जिला अधिकारी कौशाम्बी द्वारा खनन माफियाओं के दबाव में निरस्तीकरण के आदेश को स्थगित कर दिया गया। यह मामला राजस्व न्यायालय में लम्बित है, लेकिन जिला प्रशासन की मिली-भगत से खनन निरंतर जारी है, जिसके कारण पबौसा पहाड़ एवं उसके ऊपर बने ऐतिहासिक मंदिर का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। जिस ओर से यमुना नदी बह रही है उस ओर पबौसा पहाड़ 10 मीटर तक खोखला हो चुका है।

इसके साथ ही साथ इलाहबाद के उच्च न्यायालय के रुख के बावजूद यमुना नदी में महोबा घाट, नंदा का पूर्वा, डेरावाल, तिलापुर, महिला घाट, मादी का पूर्वा आदि घाटों पर मशीनों द्वारा अवैध खनन जारी है। जिसके कारण पर्यावरण पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। यमुना नदी के किनारे रहने वाले मछुआरे जाति के हजारों लोग बेरोजगार हैं और लाल सेना नामक संगठन बना कर अवैध खनन माफिया का विरोध कर रहे हैं। यदि समय रहते अवैध खनन को बंद नहीं कराया गया, तो लाल सेना नामक संगठन कभी भी नक्सलवाद की तरफ बढ़ सकता है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश की सरकार खनन माफियाओं के साथ मिल कर अवैध खनन करवा रही है, जिसके कारण पर्यावरण तथा कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा हो गई है।